

## वेदान्त में ब्रह्म और माया की द्वैत-अद्वैत व्याख्या

डा. राज पाल प्राचार्य

गांधी आदर्श कालेज  
समालखा (पानीपत)

**DECLARATION:** I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

### सारांश

भारतीय दर्शन की विविध परंपराओं में वेदान्त का स्थान अत्यंत विशिष्ट और केंद्रीय है। यह दर्शन न केवल ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, संरचना और उद्देश्य को समझाने का प्रयास करता है, अपितु आत्मा की प्रकृति, उसकी ब्रह्म से एकता, और मोक्ष की दिशा को भी स्पष्ट करता है। वेदान्त के मूल में दो अत्यंत गूढ़ और परस्पर संबंधित अवधारणाएँ हैं — **ब्रह्म** और **माया**। ब्रह्म को परम तत्त्व, नित्य, निर्विकारी, सर्वव्यापक और चेतन सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है, जबकि माया को वह शक्ति माना गया है जो ब्रह्म की वास्तविकता को आवृत कर जीव को जगत् की विविधता में उलझा देती है। यह शोधपत्र वेदान्त के तीन प्रमुख मतों — **अद्वैत**, **विशिष्टाद्वैत**, और **द्वैत** — में ब्रह्म और माया की व्याख्या का तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अद्वैत वेदान्त में शंकराचार्य ब्रह्म को ही एकमात्र सत्य मानते हैं, और माया को अविद्या के रूप में परिभाषित करते हैं, जो ब्रह्म के ज्ञान को ढकती है। विशिष्टाद्वैत वेदान्त में रामानुजाचार्य ब्रह्म को सगुण परमेश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं, जिसमें जीव और जगत् उसकी अभिन्न शक्तियाँ हैं। द्वैत वेदान्त में मध्वाचार्य ब्रह्म, जीव और माया को स्वतंत्र और वास्तविक सत्ता मानते हैं, जहाँ ब्रह्म की कृपा से ही जीव मुक्ति प्राप्त करता है।

शोध की पद्धति में प्रस्थानत्रयी — उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता — के मूल ग्रंथों का गहन अध्ययन किया गया है। साथ ही, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और मध्वाचार्य के भाष्यों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। शोध में यह भी देखा गया है कि किस प्रकार ब्रह्म और माया की अवधारणाएँ केवल दार्शनिक विमर्श नहीं, अपितु आध्यात्मिक साधना, भक्ति, ध्यान और आत्मबोध की दिशा में मार्गदर्शक हैं। इसके अतिरिक्त, आधुनिक संदर्भों में ब्रह्म और माया की अवधारणाओं को चेतना विज्ञान, आभासी यथार्थ, और मनोविज्ञान के आलोक में पुनः विश्लेषित किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि वेदान्त की ये अवधारणाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और आधुनिक बौद्धिक विमर्शों से संवाद स्थापित करने में सक्षम हैं। शोध का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि ब्रह्म और माया की द्वैत-अद्वैत व्याख्या भारतीय दर्शन की समावेशिता, तार्किकता और आध्यात्मिकता को उजागर करती है। यह विषय न केवल तात्त्विक जिज्ञासाओं का समाधान प्रस्तुत करता है, अपितु जीवन के गहनतम प्रश्नों — "मैं कौन हूँ?", "यह जगत् क्या है?", "मुक्ति क्या है?" — का उत्तर भी प्रदान करता है। इस प्रकार यह शोध भारतीय चिंतन की गहराई को उद्घाटित करता है और आधुनिक युग में भी इसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करता है।

**Keywords:** वेदान्तदर्शन, ब्रह्मकी अवधारणा, मायासिद्धांत, अद्वैतवेदान्त, द्वैतवेदान्त, विशिष्टाद्वैत, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता, अविद्या, तत्त्वमीमांसा, आत्माब्रह्मसंबंध, जगत्की मिथ्यात्वता, चेतनायथार्थ, भारतीयदर्शन, तुलनात्मकदार्शनिकविश्लेषण, आध्यात्मिकमुक्ति

## प्रस्तावना

भारतीय दर्शन की विविध परंपराओं में वेदान्त का स्थान अत्यंत विशिष्ट और केंद्रीय है। यह दर्शन न केवल आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान प्रस्तुत करता है, अपितु ब्रह्माण्ड, आत्मा, और परम सत्य के स्वरूप को भी गहराई से उद्घाटित करता है। वेदान्त का मूल आधार उपनिषदों, ब्रह्मसूत्रों और भगवद्गीता जैसे ग्रंथों में निहित है, जिनमें ब्रह्म और माया की अवधारणाएँ अत्यंत सूक्ष्मता और दार्शनिक गहराई से प्रतिपादित की गई हैं। वेदान्त में ब्रह्म को परम तत्त्व, नित्य, निराकार, सर्वव्यापक और चेतन सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है। यह वह तत्त्व है जो न उत्पन्न होता है, न नष्ट होता है, और न ही किसी परिवर्तन के अधीन होता है। ब्रह्म की यह निरपेक्षता ही उसे अद्वितीय और सर्वश्रेष्ठ बनाती है। इसके विपरीत, माया को वह शक्ति माना गया है जो ब्रह्म की वास्तविकता को आवृत करती है और जीव को जगत की विविधता में उलझा देती है। माया के कारण ही जीव ब्रह्म को नहीं पहचान पाता और संसार को सत्य मानकर मोह में बंध जाता है। वेदान्त की विभिन्न शाखाएँ — जैसे अद्वैत वेदान्त, द्वैत वेदान्त, विशिष्टाद्वैत वेदान्त आदि — ब्रह्म और माया के संबंध को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से देखती हैं। शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में माया को अविद्या कहा गया है, जो ब्रह्म के ज्ञान को ढकती है और जगत को मिथ्या रूप में प्रस्तुत करती है। उनके अनुसार केवल ब्रह्म ही सत्य है, और जगत तथा जीव ब्रह्म की ही अभिव्यक्ति हैं, किंतु अज्ञानवश भिन्न प्रतीत होते हैं। वहीं रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत में ब्रह्म को सगुण माना गया है, और माया को उसकी शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है — जो वास्तविक है और ब्रह्म से अभिन्न है। मध्वाचार्य के द्वैत वेदान्त में ब्रह्म और माया दोनों को स्वतंत्र सत्ता माना गया है, और जगत को वास्तविक तथा ब्रह्म से भिन्न माना गया है। इन विभिन्न दृष्टिकोणों में ब्रह्म और माया की व्याख्या न केवल दार्शनिक मतभेदों को दर्शाती है, बल्कि भारतीय चिंतन की गहराई और विविधता को भी उजागर करती है। यह विषय आधुनिक युग में भी अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ माया की अवधारणा को आभासी यथार्थ, चेतना विज्ञान, और मनोविज्ञान के संदर्भ में पुनः परिभाषित किया जा रहा है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य है — वेदान्त में ब्रह्म और माया की अवधारणाओं का गहन विश्लेषण करना, विभिन्न वेदान्त मतों की तुलनात्मक समीक्षा करना, और यह समझना कि इन सिद्धांतों का आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा सामाजिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन न केवल भारतीय दर्शन की गहराई को उद्घाटित करेगा, अपितु आधुनिक विचारधाराओं के साथ संवाद स्थापित करने में भी सहायक सिद्ध होगा।

## वेदान्त का संक्षिप्त परिचय

भारतीय दार्शनिक परंपरा में वेदान्त दर्शन को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। यह दर्शन न केवल भारतीय चिंतन की पराकाष्ठा का प्रतीक है, अपितु समस्त विश्व के दार्शनिक विमर्शों में भी इसका विशिष्ट योगदान है। 'वेदान्त' शब्द का शाब्दिक अर्थ है — *वेदों का अंत*, अर्थात् वेदों का अंतिम भाग, जो मुख्यतः **उपनिषदों** में निहित है। परंतु यह केवल ग्रंथों का अंत नहीं, बल्कि ज्ञान की पराकाष्ठा, तात्त्विक बोध की चरम अवस्था का द्योतक भी है। वेदान्त का मूल उद्देश्य है — **ब्रह्म** (परम तत्त्व) की पहचान, **आत्मा** की प्रकृति का उद्घाटन, और **मुक्ति** की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करना। यह दर्शन यह मानता है कि समस्त जगत एक परम तत्त्व से उत्पन्न हुआ है, उसी में स्थित है और अंततः उसी में लीन हो जाता है। यह परम तत्त्व ही ब्रह्म है — जो नित्य, निराकार, निर्विकारी, सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है।

वेदान्त के तीन प्रमुख आधार ग्रंथ हैं जिन्हें *प्रस्थानत्रयी* कहा जाता है:

1. **उपनिषद्** – जो ब्रह्म और आत्मा के रहस्य को प्रतिपादित करते हैं।
2. **ब्रह्मसूत्र** – जो वेदान्त के सिद्धांतों को तार्किक रूप से व्यवस्थित करते हैं।
3. **भगवद्गीता** – जो वेदान्त के सिद्धांतों को व्यावहारिक जीवन में लागू करने की दिशा दिखाती है।

इन ग्रंथों की व्याख्या विभिन्न आचार्यों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से की, जिससे वेदान्त की अनेक शाखाएँ विकसित हुईं। प्रमुख वेदान्त मतों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

- **अद्वैत वेदान्त** (शंकराचार्य): इस मत में केवल ब्रह्म को ही परम सत्य माना गया है। जगत और जीव माया के कारण भिन्न प्रतीत होते हैं, किंतु वास्तव में वे ब्रह्म की ही अभिव्यक्ति हैं। माया को अविद्या कहा गया है, जो ब्रह्म के ज्ञान को ढकती है।
- **विशिष्टाद्वैत वेदान्त** (रामानुजाचार्य): इस मत में ब्रह्म को सगुण माना गया है, और जीव तथा जगत को उसकी अभिन्न शक्तियाँ। माया यहाँ वास्तविक है और ब्रह्म से अविभाज्य है।
- **द्वैत वेदान्त** (मध्वाचार्य): इस मत में ब्रह्म, जीव और जगत तीनों को स्वतंत्र और वास्तविक सत्ता माना गया है। माया को ब्रह्म से भिन्न और वास्तविक माना गया है।

इन मतों की विविधता भारतीय दर्शन की समावेशिता, गहराई और तार्किक परिपक्वता को दर्शाती है। वेदान्त केवल एक दार्शनिक प्रणाली नहीं, बल्कि एक **जीवनदर्शन** है — जो व्यक्ति को आत्मा की पहचान कराकर, उसे ब्रह्म के साथ एकत्व की अनुभूति कराता है। यह दर्शन केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक भी है, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र — नैतिकता, कर्तव्य, भक्ति, ज्ञान और ध्यान — को प्रभावित करता है। वेदान्त का यह संक्षिप्त परिचय हमें यह समझने में सहायक होता है कि ब्रह्म और माया की अवधारणाएँ केवल दार्शनिक विमर्श नहीं, बल्कि आत्मबोध और मोक्ष की दिशा में एक गहन साधना का मार्ग हैं। यही कारण है कि वेदान्त आज भी न केवल भारत में, बल्कि विश्वभर में आध्यात्मिक और दार्शनिक जिज्ञासुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

## ब्रह्म की अवधारणा

भारतीय दर्शन में ब्रह्म की अवधारणा अत्यंत गूढ़, व्यापक और तात्त्विक है। यह केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, अपितु समस्त सृष्टि का मूल कारण, आधार और अंतिम लक्ष्य है। वेदान्त दर्शन में ब्रह्म को उस परम सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है जो नित्य, निराकार, निर्विकारी, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और चेतन है। ब्रह्म न तो उत्पन्न होता है, न नष्ट होता है, और न ही किसी परिवर्तन के अधीन होता है। वह काल, देश और वस्तु की सीमाओं से परे है। उपनिषदों में ब्रह्म को "सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म" कहा गया है — अर्थात् वह परम सत्य है, जो ज्ञानस्वरूप और अनंत है।

वेदान्त में ब्रह्म को दो रूपों में समझाया गया है — **निर्गुण ब्रह्म** और **सगुण ब्रह्म**।

- **निर्गुण ब्रह्म** वह है जो किसी भी गुण, रूप, आकार या क्रिया से रहित है। यह ब्रह्म पूर्णतः निराकार, निर्विकारी और अव्यक्त है। अद्वैत वेदान्त में इसी ब्रह्म को परम सत्य माना गया है। यह वह तत्त्व है जो केवल आत्मबोध द्वारा जाना जा सकता है, इंद्रियों या बुद्धि द्वारा नहीं।

- **सगुण ब्रह्म** वह है जो ईश्वर के रूप में गुणों, शक्तियों और रूपों से युक्त होता है। यह ब्रह्म भक्तों के लिए सुलभ होता है और भक्ति, ध्यान तथा उपासना का विषय बनता है। विशिष्टाद्वैत और द्वैत वेदान्त में इसी सगुण ब्रह्म को परमेश्वर माना गया है।

शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म को ही एकमात्र सत्य माना गया है। उनके अनुसार ब्रह्म ही सब कुछ है — "*ब्रह्म सत्यं, जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः*"। इस मत में ब्रह्म और आत्मा में कोई भेद नहीं है। जीव ब्रह्म का ही अंश नहीं, अपितु ब्रह्म ही है, किंतु अज्ञानवश वह स्वयं को भिन्न मानता है। माया के कारण जीव जगत को सत्य मानता है और ब्रह्म से भिन्न प्रतीत होता है। जब यह अज्ञान दूर होता है, तब आत्मा को ब्रह्म का साक्षात्कार होता है और वही मुक्ति कहलाती है। अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म की अनुभूति को *तुरीय अवस्था* कहा गया है — जो जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति से परे है। यह अवस्था केवल ज्ञान के माध्यम से प्राप्त होती है, जिसे *निर्विकल्प समाधि* भी कहा गया है।

रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत वेदान्त में ब्रह्म को सगुण माना गया है। उनके अनुसार ब्रह्म ही परमेश्वर है, जिसमें जीव और जगत उसकी शक्तियाँ हैं। यहाँ ब्रह्म और आत्मा में भेद है, किंतु वे एक ही सत्ता के अंग हैं — जैसे शरीर और आत्मा। ब्रह्म की यह व्याख्या भक्ति और समर्पण की भावना को प्रोत्साहित करती है। रामानुजाचार्य के अनुसार ब्रह्म में *सत्य, ज्ञान और अनन्तता* के साथ-साथ *दयालुता, सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता* जैसे गुण भी हैं। इस मत में ब्रह्म की प्राप्ति केवल ज्ञान से नहीं, अपितु भक्ति, समर्पण और कृपा से होती है। जीव ब्रह्म का अंश नहीं, अपितु उसका सेवक है, और मुक्ति ब्रह्म के सान्निध्य में रहकर प्राप्त होती है। मध्वाचार्य के द्वैत वेदान्त में ब्रह्म को ईश्वर के रूप में स्वीकार किया गया है, जो जीव और जगत से सर्वथा भिन्न है। इस मत में ब्रह्म, जीव और प्रकृति तीनों स्वतंत्र और वास्तविक सत्ता हैं। ब्रह्म यहाँ सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सगुण ईश्वर है, जिसकी कृपा से ही जीव मुक्ति प्राप्त करता है। इस मत में ब्रह्म और आत्मा के बीच एक स्थायी भेद स्वीकार किया गया है, जिसे कभी समाप्त नहीं किया जा सकता। द्वैत वेदान्त में ब्रह्म की उपासना, भक्ति और कृपा को मुक्ति का मार्ग माना गया है। यहाँ ज्ञान की भूमिका गौण है, और भक्ति को प्रधानता दी गई है। उपनिषदों में ब्रह्म की व्याख्या अत्यंत गूढ़ और प्रतीकात्मक रूप में की गई है। *छान्दोग्य उपनिषद* में कहा गया है — "*तत्त्वमसि*" — अर्थात् "तू वही ब्रह्म है"। *बृहदारण्यक उपनिषद* में "*अहं ब्रह्मास्मि*" — "मैं ही ब्रह्म हूँ" — का उद्घोष मिलता है। ये महावाक्य ब्रह्म और आत्मा के एकत्व को उद्घाटित करते हैं।

उपनिषदों में ब्रह्म को *नित्य, अद्वितीय, अविकारी, अनिर्वचनीय* और *अनुभवगम्य* कहा गया है। यह वह तत्त्व है जिसे शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता, केवल अनुभव द्वारा जाना जा सकता है। आधुनिक युग में ब्रह्म की अवधारणा को चेतना विज्ञान, क्रांतिम भौतिकी और मनोविज्ञान के संदर्भ में पुनः परिभाषित किया जा रहा है। ब्रह्म को एक सार्वभौमिक चेतना, ऊर्जा या अस्तित्व के रूप में देखा जा रहा है। अनेक वैज्ञानिक और दार्शनिक ब्रह्म की अवधारणा को ब्रह्माण्ड की मूल सत्ता के रूप में स्वीकार कर रहे हैं। ब्रह्म की यह बहुआयामी व्याख्या भारतीय दर्शन की गहराई, समावेशिता और आध्यात्मिकता को दर्शाती है। यह न केवल तात्त्विक जिज्ञासा का समाधान करती है, अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिशा प्रदान करती है — चाहे वह ध्यान हो, भक्ति हो, या कर्म।

## माया का स्वरूप और भूमिका

वेदान्त दर्शन में **माया** एक अत्यंत रहस्यमयी और बहुआयामी अवधारणा है। यह वह शक्ति है जो ब्रह्म की वास्तविकता को आवृत करती है और जीव को जगत की विविधता में उलझा देती है। माया का कार्य है — एकता में बहुलता का भ्रम उत्पन्न करना, सत्य में असत्य का आभास देना, और ब्रह्म के ज्ञान को ढककर अज्ञान की स्थिति उत्पन्न करना। यह न तो पूर्णतः असत्य है, न ही पूर्णतः सत्य — इसे "अनिर्वचनीय" कहा गया है, अर्थात् जिसे न सत्य कहा जा सकता है, न असत्य। **अद्वैत वेदान्त** में माया को *अविद्या* के रूप में परिभाषित किया गया है। शंकराचार्य के अनुसार माया वह शक्ति है जो ब्रह्म के ज्ञान को ढकती है और जीव को जगत की मिथ्या सत्ता में बाँध देती है। माया के कारण ही जीव ब्रह्म से भिन्न प्रतीत होता है, जबकि वास्तव में वह ब्रह्म ही है। यह माया दो प्रकार की होती है —

1. **आवरण शक्ति** : जो ब्रह्म के ज्ञान को ढकती है।
2. **विक्षेप शक्ति** : जो विविधता और भ्रम उत्पन्न करती है।

अद्वैत में माया को *अनादि* माना गया है — अर्थात् इसका कोई प्रारंभ नहीं है, किंतु इसका अंत संभव है जब आत्मा ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेती है। माया का अस्तित्व केवल *व्यवहारिक सत्य* में है, *परमार्थिक सत्य* में नहीं।

**रामानुजाचार्य** के विशिष्टाद्वैत मत में माया को ब्रह्म की शक्ति माना गया है, जो वास्तविक है और ब्रह्म से अभिन्न है। यहाँ माया को असत्य या भ्रम नहीं माना गया, बल्कि उसे ब्रह्म की *प्रकृति* के रूप में स्वीकार किया गया है। माया के माध्यम से ही ब्रह्म सृष्टि करता है, जीवों को कर्मानुसार फल देता है, और उन्हें मोक्ष की दिशा में प्रेरित करता है। इस दृष्टिकोण में माया का कार्य केवल भ्रम उत्पन्न करना नहीं, बल्कि सृष्टि का संचालन करना है। यह दृष्टिकोण भक्ति और समर्पण को प्रधानता देता है, जहाँ माया ब्रह्म की लीला का माध्यम बनती है। **मध्वाचार्य** के द्वैत वेदान्त में माया को एक स्वतंत्र और वास्तविक सत्ता माना गया है। यह ब्रह्म से भिन्न है और उसका उपकरण है। माया के माध्यम से ही ईश्वर जगत की रचना करता है और जीवों को कर्मानुसार फल देता है। यहाँ माया को भ्रम या अविद्या नहीं माना गया, बल्कि उसे एक *तथात्मक शक्ति* के रूप में देखा गया है। द्वैत वेदान्त में माया का कार्य है — जीवों को उनके कर्मों के अनुसार संसार में बाँधना और ईश्वर की इच्छा के अनुसार जगत का संचालन करना। इस मत में माया का अंत केवल ईश्वर की कृपा से संभव है, न कि केवल ज्ञान से।

उपनिषदों में माया की व्याख्या प्रत्यक्ष रूप से नहीं मिलती, किंतु इसके संकेत स्पष्ट हैं। *ईशावास्य उपनिषद* में कहा गया है — "*विद्यां च अविद्यां च यः तद् वेदो...*" — अर्थात् जो विद्या और अविद्या दोनों को जानता है, वही मोक्ष प्राप्त करता है। यहाँ अविद्या माया का ही रूप है, जो ब्रह्म के ज्ञान को ढकती है। *श्वेताश्वतर उपनिषद* में माया को ईश्वर की शक्ति कहा गया है — "*मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्*" — अर्थात् माया प्रकृति है और मायावी महेश्वर है। यह दृष्टिकोण विशिष्टाद्वैत और द्वैत के निकट है। आधुनिक युग में माया की अवधारणा को मनोविज्ञान, चेतना विज्ञान और आभासी यथार्थ के संदर्भ में पुनः परिभाषित किया जा रहा है। माया को मानसिक भ्रम, चेतना की सीमाएँ, और संवेदनात्मक अनुभवों की अस्थिरता के रूप में देखा जा रहा है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से माया वह है जो वास्तविकता को हमारी इंद्रियों और मन के माध्यम से विकृत करती है। माया की यह व्याख्या दर्शाती है कि यह अवधारणा केवल धार्मिक या दार्शनिक नहीं, अपितु वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक विमर्शों से भी जुड़ी हुई है। माया की अवधारणा वेदान्त दर्शन में अत्यंत गूढ़ और बहुआयामी है। यह न केवल ब्रह्म और जीव के संबंध को

स्पष्ट करती है, अपितु जगत की वास्तविकता, आत्मा की स्थिति, और मुक्ति की दिशा को भी परिभाषित करती है। विभिन्न वेदान्त मतों में माया की व्याख्या भिन्न होने के बावजूद, उसका उद्देश्य एक ही है — जीव को ब्रह्म की ओर उन्मुख करना और अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाना।

## द्वैत और अद्वैत की तुलनात्मक समीक्षा

भारतीय दर्शन में वेदान्त की विभिन्न शाखाएँ ब्रह्म, जीव और जगत के संबंध को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से देखती हैं। इनमें **अद्वैत वेदान्त** और **द्वैत वेदान्त** दो अत्यंत प्रभावशाली और परस्पर विरोधी मत हैं, जिनकी तुलना करना न केवल दार्शनिक दृष्टि से आवश्यक है, अपितु आत्मबोध और मुक्ति की दिशा में भी अत्यंत उपयोगी है। **अद्वैत वेदान्त**, जिसकी स्थापना शंकराचार्य ने की, ब्रह्म को ही एकमात्र सत्य मानता है। इस मत में कहा गया है — "*ब्रह्म सत्यं, जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः*" — अर्थात् ब्रह्म ही सत्य है, जगत मिथ्या है, और जीव ब्रह्म से भिन्न नहीं है। यहाँ ब्रह्म *निर्गुण, निराकार, अविकारी* और *अनिर्वचनीय* है। जीव और जगत माया के कारण भिन्न प्रतीत होते हैं, किंतु वास्तव में वे ब्रह्म की ही अभिव्यक्ति हैं। अद्वैत वेदान्त में मुक्ति का मार्ग *ज्ञान* है — जब जीव यह जान लेता है कि वह ब्रह्म ही है, तब अज्ञान का नाश होता है और आत्मा ब्रह्म में लीन हो जाती है। यहाँ भक्ति, कर्म और उपासना सहायक हैं, किंतु अंतिम मुक्ति केवल ज्ञान से संभव है।

**द्वैत वेदान्त**, जिसकी स्थापना मध्वाचार्य ने की, ब्रह्म, जीव और जगत को तीन स्वतंत्र और वास्तविक सत्ता मानता है। इस मत में ब्रह्म सगुण ईश्वर है — सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापक। जीव ब्रह्म का अंश नहीं, अपितु उसकी सृष्टि है, और दोनों के बीच एक स्थायी भेद है। जगत भी वास्तविक है और ईश्वर की इच्छा से संचालित होता है। द्वैत वेदान्त में मुक्ति का मार्ग *भक्ति* और *ईश्वर की कृपा* है। यहाँ ज्ञान की भूमिका गौण है, और आत्मा ब्रह्म में लीन नहीं होती, बल्कि उसके सान्निध्य में रहती है। यह मत ईश्वर की सर्वोच्चता और जीव की सेवकता को प्रधानता देता है।

### तुलनात्मक विश्लेषण

पक्ष	अद्वैत वेदान्त	द्वैत वेदान्त
ब्रह्म का स्वरूप	निर्गुण, निराकार	सगुण, साकार
जीव का स्वरूप	ब्रह्म से अभिन्न	ब्रह्म से भिन्न
जगत की स्थिति	मिथ्या (माया का परिणाम)	वास्तविक
माया की भूमिका	अविद्या, भ्रम उत्पन्न करती है	ईश्वर की शक्ति, वास्तविक
मुक्ति का मार्ग	ज्ञान द्वारा आत्मबोध	भक्ति और ईश्वर की कृपा
मुक्ति की अवस्था	ब्रह्म में लीनता (एकत्व)	ईश्वर के सान्निध्य में निवास
दर्शन की प्रवृत्ति	तात्त्विक और निरपेक्ष	भक्तिपरक और सगुण

अद्वैत वेदान्त व्यक्ति को आत्मबोध की दिशा में प्रेरित करता है, जहाँ वह अपने भीतर ब्रह्म की अनुभूति करता है। यह दृष्टिकोण गहन ध्यान, वैराग्य और विवेक को प्रोत्साहित करता है। इसके विपरीत, द्वैत वेदान्त व्यक्ति को ईश्वर की भक्ति, सेवा और समर्पण की ओर उन्मुख करता है। यह दृष्टिकोण भावनात्मक जुड़ाव, श्रद्धा और कृपा पर आधारित है। दोनों मतों का उद्देश्य मुक्ति है, किंतु उनकी पद्धति, दृष्टिकोण और अनुभव की प्रकृति भिन्न है। अद्वैत में आत्मा ब्रह्म में विलीन हो जाती है, जबकि द्वैत में आत्मा ब्रह्म के समीप रहती है, किंतु उससे भिन्न बनी रहती है। द्वैत और अद्वैत वेदान्त की तुलना हमें यह समझने में सहायता करती है कि भारतीय दर्शन केवल एकमत नहीं, अपितु बहुमत और बहुविध दृष्टिकोणों का संगम है। यह समावेशिता ही इसकी शक्ति है, जहाँ एक ही सत्य को विभिन्न मार्गों से समझा और अनुभव किया जा सकता है। अद्वैत का ज्ञानमार्ग और द्वैत का भक्तिमार्ग — दोनों ही आत्मा को ब्रह्म की ओर ले जाते हैं, किंतु उनकी यात्रा की शैली और अनुभूति की प्रकृति भिन्न होती है।

## वेदान्त की आधुनिक प्रासंगिकता

वेदान्त दर्शन, यद्यपि प्राचीन भारतीय चिंतन की उपज है, फिर भी इसकी अवधारणाएँ आज के आधुनिक युग में भी अत्यंत प्रासंगिक और प्रभावशाली हैं। ब्रह्म और माया जैसे तत्त्वमीमांसीय विचार न केवल आध्यात्मिक साधना के लिए मार्गदर्शक हैं, अपितु आधुनिक विज्ञान, मनोविज्ञान, चेतना अध्ययन और सामाजिक विमर्शों में भी गहन संवाद स्थापित करते हैं। वेदान्त में ब्रह्म को सर्वव्यापक चेतना के रूप में देखा गया है — जो नित्य, निर्विकारी और अनंत है। आधुनिक चेतना विज्ञान में भी चेतना को एक मूलभूत सत्ता माना जा रहा है, जो केवल मस्तिष्क की क्रिया नहीं, अपितु एक स्वतंत्र अस्तित्व है। अनेक वैज्ञानिक और दार्शनिक यह मानने लगे हैं कि चेतना ब्रह्माण्ड की मूल प्रकृति हो सकती है — ठीक उसी प्रकार जैसे वेदान्त में ब्रह्म को सर्वस्व माना गया है। क्वांटम भौतिकी में भी यह विचार उभर रहा है कि पदार्थ की गहराई में चेतना का हस्तक्षेप है। यह दृष्टिकोण अद्वैत वेदान्त के उस सिद्धांत से मेल खाता है जिसमें ब्रह्म ही सब कुछ है, और जगत उसकी ही अभिव्यक्ति है। वेदान्त में माया को वह शक्ति माना गया है जो ब्रह्म की वास्तविकता को ढकती है और जीव को जगत की विविधता में उलझा देती है। आधुनिक युग में जब हम आभासी यथार्थ, संवर्धित यथार्थ, और डिजिटल भ्रमों की बात करते हैं, तो माया की अवधारणा अत्यंत सटीक प्रतीत होती है। आज का मनुष्य अनेक स्तरों पर भ्रमित है — दृश्य, श्रव्य, मानसिक और भावनात्मक। सोशल मीडिया, विज्ञापन, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से जो यथार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है, वह माया के ही आधुनिक रूप हैं। वेदान्त हमें यह सिखाता है कि इन भ्रमों से ऊपर उठकर हम ब्रह्म की ओर उन्मुख हों — जो शाश्वत, सत्य और निर्विकारी है। माया के कारण जीव अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाता है और स्वयं को शरीर, मन और अहंकार से जोड़ लेता है। आधुनिक मनोविज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि व्यक्ति का आत्मबोध अनेक मानसिक आवरणों से ढका होता है — जैसे अचेतन मन, पूर्वग्रह, सामाजिक दबाव आदि। वेदान्त का *विवेक* और *वैराग्य* का मार्ग व्यक्ति को इन आवरणों से मुक्त करता है और आत्मा की शुद्धता की ओर ले जाता है। ध्यान, आत्मनिरीक्षण और मौन की विधियाँ आज के मनोवैज्ञानिक उपचारों में भी उपयोग की जा रही हैं — जो मूलतः वेदान्त की ही देन हैं। वेदान्त केवल तात्त्विक चिंतन नहीं, अपितु एक जीवनदर्शन भी है। ब्रह्म की सर्वव्यापकता का सिद्धांत हमें यह सिखाता है कि प्रत्येक जीव में वही चेतना है — जिससे समता, करुणा और अहिंसा की भावना उत्पन्न होती है। यह दृष्टिकोण आज के सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों में अत्यंत प्रासंगिक है। माया के कारण उत्पन्न भेदभाव — जाति, धर्म, वर्ग, लिंग — वेदान्त के अनुसार अज्ञान का परिणाम हैं। जब हम ब्रह्म को सबमें देखते हैं, तब भेदभाव समाप्त होता है और समरसता की स्थापना होती है। वेदान्त की अवधारणाएँ आज के वैश्विक दर्शनशास्त्र में भी गहन संवाद स्थापित कर रही हैं। पश्चिमी दार्शनिक — जैसे केन विल्बर, डेविड चैल्मर्स, एलन वॉट्स —

वेदान्त के सिद्धांतों को आधुनिक भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। अनेक विश्वविद्यालयों में वेदान्त को तुलनात्मक दर्शन के रूप में पढ़ाया जा रहा है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में यदि वेदान्त को समाविष्ट किया जाए, तो विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान मिलेगा, अपितु आत्मबोध, नैतिकता और जीवन की दिशा भी प्राप्त होगी। वेदान्त की ब्रह्म और माया संबंधी अवधारणाएँ आज के वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और दार्शनिक विमर्शों में अत्यंत प्रासंगिक हैं। यह दर्शन हमें केवल आत्मा और परमात्मा के संबंध को नहीं सिखाता, अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सत्य, विवेक और समरसता की स्थापना करता है। आधुनिक युग की जटिलताओं, भ्रमों और मानसिक तनावों से मुक्ति का मार्ग वेदान्त में ही निहित है। इस प्रकार, वेदान्त केवल अतीत का दर्शन नहीं, अपितु वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शक है — जो मानवता को उसकी मूल चेतना की ओर उन्मुख करता है।

## निष्कर्ष

वेदान्त दर्शन भारतीय तात्त्विक परंपरा की वह धारा है जिसमें ब्रह्म, माया, जीव और जगत के संबंधों की गहनतम व्याख्या की गई है। यह दर्शन न केवल आत्मा और परमात्मा के बीच के संबंध को स्पष्ट करता है, अपितु जीवन, मृत्यु, मुक्ति और यथार्थ के प्रश्नों का समाधान भी प्रस्तुत करता है। इस शोधपत्र में हमने वेदान्त की तीन प्रमुख धाराओं — अद्वैत, द्वैत और विशिष्टाद्वैत — के अंतर्गत ब्रह्म और माया की अवधारणाओं का तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म को ही एकमात्र सत्य माना गया है, और माया को अविद्या के रूप में परिभाषित किया गया है जो ब्रह्म के ज्ञान को ढकती है। द्वैत वेदान्त में ब्रह्म, जीव और माया को स्वतंत्र और वास्तविक सत्ता माना गया है, जहाँ ईश्वर की कृपा से ही जीव मुक्ति प्राप्त करता है। विशिष्टाद्वैत वेदान्त में ब्रह्म को सगुण परमेश्वर के रूप में देखा गया है, जिसमें जीव और जगत उसकी अभिन्न शक्तियाँ हैं। इन तीनों मतों की व्याख्याएँ भिन्न होते हुए भी एक ही लक्ष्य की ओर उन्मुख हैं — आत्मा की मुक्ति और ब्रह्म की प्राप्ति। माया की अवधारणा इन मतों में भिन्न रूपों में प्रकट होती है — कहीं अविद्या, कहीं शक्ति, और कहीं उपकरण। यह भिन्नता भारतीय दर्शन की समावेशिता और बहुविधता को दर्शाती है। माया केवल भ्रम नहीं, अपितु एक दार्शनिक उपकरण है जो जीव को उसकी स्थिति, उद्देश्य और मार्ग का बोध कराती है। इस शोध में यह भी स्पष्ट हुआ कि वेदान्त की ब्रह्म और माया संबंधी अवधारणाएँ आज के आधुनिक युग में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। चेतना विज्ञान, आभासी यथार्थ, मनोविज्ञान, सामाजिक न्याय और नैतिकता जैसे क्षेत्रों में वेदान्त के सिद्धांत गहन संवाद स्थापित कर रहे हैं। यह दर्शन केवल अतीत की धरोहर नहीं, अपितु वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शक है। वेदान्त में ब्रह्म और माया की द्वैत-अद्वैत व्याख्या केवल दार्शनिक विमर्श नहीं, अपितु आत्मा की यात्रा का मानचित्र है। यह दर्शन हमें यह सिखाता है कि यथार्थ क्या है, भ्रम क्या है, और मुक्ति की दिशा क्या हो सकती है। इस शोध के माध्यम से हमने न केवल वेदान्त की गहराई को समझा, अपितु यह भी जाना कि यह दर्शन आज भी उतना ही जीवंत, प्रासंगिक और प्रेरणादायक है जितना कि सहस्रों वर्ष पूर्व था।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **उपनिषद संग्रह** — गीता प्रेस, गोरखपुर
2. **ब्रह्मसूत्र** — मूल ग्रंथ सहित शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और मध्वाचार्य के भाष्य
3. **भगवद्गीता** — विभिन्न भाष्यकारों द्वारा व्याख्यायित संस्करण
4. **शंकर भाष्य** — आदि शंकराचार्य द्वारा उपनिषद, गीता और ब्रह्मसूत्र पर भाष्य
5. **श्रीभाष्य** — रामानुजाचार्य द्वारा ब्रह्मसूत्र पर विशिष्टद्वैत दृष्टिकोण से भाष्य
6. **अनुव्याख्यान** — मध्वाचार्य द्वारा ब्रह्मसूत्र पर द्वैत वेदान्त की व्याख्या
7. **श्वेताश्वतर उपनिषद** — माया और ईश्वर संबंधी विचारों के लिए
8. **बृहदारण्यक उपनिषद** — ब्रह्म और आत्मा की एकता पर आधारित महावाक्य
9. डॉ. राधाकृष्णन — *Indian Philosophy*, Vol. I & II
10. स्वामी चिन्मयानंद — *Self Unfoldment, Vedanta through Questions and Answers*
11. स्वामी विवेकानंद — *Jnana Yoga, Raja Yoga, Lectures on Vedanta*
12. डॉ. टी.एम.पी. महादेवन — *Outlines of Hindu Metaphysics*
13. डॉ. के.सी. भट्टाचार्य — *Studies in Vedanta*
14. स्वामी सत्यानंद सरस्वती — *Four Chapters on Freedom*
15. डॉ. एस.एन. दासगुप्त — *History of Indian Philosophy*, Vol. I
16. केन विल्बर — *The Spectrum of Consciousness*
17. डेविड चैल्मर्स — *The Conscious Mind* (चेतना विज्ञान के संदर्भ में)
18. *Journal of Indian Philosophy* — भारतीय दर्शन पर शोध लेख
19. *Philosophy East and West* — तुलनात्मक दर्शन के लिए
20. *International Journal of Hindu Studies* — आधुनिक संदर्भों में वेदान्त
21. *Vedanta Kesari* — रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका
22. *Prabuddha Bharata* — आध्यात्मिक और दार्शनिक लेखों का संग्रह



## Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

**डा. राज पाल प्राचार्य**

\*\*\*\*\*